संपादक का नोट

मसीह में प्यारे भाइयों और बहनों, प्रभु की स्तुति हो! सबसे पहले, आइए हम अपने प्रभु और उद्धारकर्ता, यीशु मसीह के प्रति शुक्रगुज़र और आभारी हों, कि उन्होंने हमें हमारे जीवन में एक और साल का आशीष दिया है, और हम प्रार्थना करते हैं कि उनका आशीष पूरे नया साल में हमारे साथ बना रहे!

यशायाह 45:22 ''"हे पृथ्वी के दूर दूर के देश के रहनेवालो, तुम मेरी ओर फिरो और उद्धार पाओ! क्योंकि मैं ही परमेश्वर हूँ और दूसरा कोई और नहीं है।'' यीशु बहुत स्पष्ट रूप से बार–बार बाइबिल में उल्लेख करते हैं, *'केवल मेरे द्वारा ही तुम छुड़ाए जाओगे; केवल मेरे द्वारा ही तुम लोगों को छुटकारा मिलेगा; यह केवल मेरे द्वारा ही है कि तुम परमेश्वर के राज्य को प्राप्त करोगे।'* इसलिए, यह 100 प्रतिशत निश्चित है कि केवल यीशु ही मार्ग है। उनके बिना, हम कुछ नहीं कर सकते, न ही हम स्वर्ग के राज्य के निवासस्थान तक पहुँच सकते हैं। लेकिन परमेश्वर हमारे जीवन में जो कार्य करते है उसे देखने और स्वीकार करने के लिए, हमें विश्वास होना चाहिए, और हमारी आत्मिक आँखें खुली होनी चाहिए। जैसा कि दाऊद भजन संहिता 121:1 में कहता है, ''मैं अपनी आँखें पर्वतों की ओर लगाऊँगा। मुझे सहायता कहाँ से मिलेगी?'' वैसे ही हमारी आंखें और विश्वास परमेश्वर पर होना चाहिए, तभी हमारा जीवन इस संसार में साक्षी बन सकता है।

भजन संहिता 126:5–6 ''जो आँसू बहाते हुए बोते हैं, वे जयजयकार करते हुए लवने पाएँगे। चाहे बोनेवाला बीज लेकर रोता हुआ चला जाए, परन्तु वह फिर पूलियाँ लिए जयजयकार करता हुआ निश्चय लौट आएगा।'' जब हम एक महीने मेहनत करते हैं तो हमें महीने के अंत में वेतन मिलता है। एक साल पढाई करने के बाद, जब हम अपनी परीक्षा लिखते हैं, तो हमें अपना परिणाम मिलता है। इसी तरह, बिना परीक्षण के, हम जिन चुनौतियों का सामना कर रहे हैं, उन पर विजय प्राप्त नहीं कर सकते। हम जीवन में ऐसी भौतिक चीज़ों के पीछे भागते हैं जो हमेशा हमारे साथ नहीं रहतीं, जबकि हम अपने आत्मारिक उन्नति के लिए सबसे ज़रूरी चीज़ों को नज़रअंदाज़ कर देते हैं। हमारे लिए, आनंद में काटने के लिए हमें विश्वास में बोना होगा। हमें निरंतर प्रभु पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। जब हम प्रभु को खोजते हैं, तो वह हमारे जीवन में सब कुछ जोड़ देंगे – धन, समृद्धि, स्वास्थ्य, आदि।

यशायाह 65:24 ''उनके पुकारने से पहले ही मैं उनको उत्तर दूँगा, और उनके माँगते ही मैं उनकी सुन लूँगा।'' जब हमारी दृष्टि और हमारा विश्वास परमेश्वर पर टिका होता है, तो हमारे पुकारने से पहले ही वह उत्तर दे देते है और हमारे मांगने से पहले ही हमें सब कुछ दे दिया जाएगा। साथ ही, कोई विपत्ति हमारे पास नहीं आ सकती क्योंकि हम उनकी आँख की पुतली हैं, जैसा कि जकर्याह 2:8 में दिया गया है ''क्योंकि सेनाओं का यहोवा यों कहता है, उस तेज के प्रगट होने के बाद उसने मुझे उन जातियों के पास भेजा है जो तुम्हें लूटती थीं, क्योंकि जो तुम को छूता है, वह मेरी आँख की पुतली ही को छूता है।''

इसलिए प्रिय पाठकों, आइए हम हमेशा प्रभु की आँख की पुतली बनने का प्रयास करें ताकि हम हमेशा सुरक्षित रहें, और कोई भी दुश्मन कभी भी हमें छूने का स्वप्न न देख सके।

हम फिर से मिलें तब तक,

पास्टर सरोजा म।

यशायाह 53:2 ''क्योंकि वह उसके सामने अँकुर के समान, और ऐसी जड़ के समान उगा जो निर्जल भूमि में फूट निकले; उसकी न तो कुछ सुन्दरता थी कि हम उसको देखते, और न उसका रूप ही हमें ऐसा दिखाई पड़ा कि हम उसको चाहते।'' यशायाह एक महान भविष्यद्वक्ता था, और उसने प्रभु परमेश्वर को अपनी आत्मिक आँखों से दो बार दर्शनों में देखा। पहली बार जब यशायाह ने प्रभु को देखा, परमेश्वर सर्वोच्च सिंहासन पर विराजमान थे। यशायाह 6:1 ''जिस वर्ष उज्जियाह राजा मरा, मैं ने प्रभु को बहुत ही ऊँचे सिंहासन पर विराजमान देखा; और उसके वस्त्र के घेर से मन्दिर भर गया।'' यशायाह ने यहोवा को महिमा में विराजमान देखा। प्रकाशितवाक्य 4:3 ''जो उस पर बैठा है वह यशब और माणिक्य–सा दिखाई पड़ता है, और उस सिंहासन के चारों ओर मरकत–सा एक मेघधुनष दिखाई देता है।'' यशायाह ने परमेश्वर के सिंहासन के चारों ओर एक मेघधुनष जैसा मुकुट देखा, और परमेश्वर इस महिमामय ज्योति के बीच में बैठे थे।

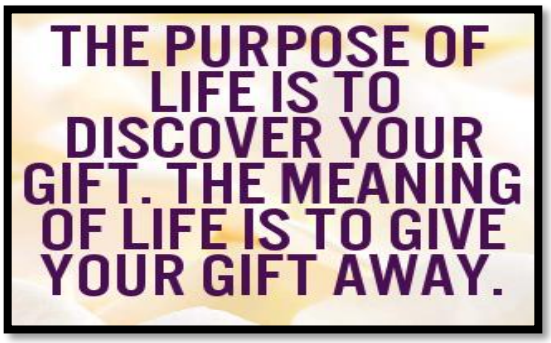

हम ने परमेश्वर की सुन्दरता के बारे में भी पढ़ा हैं श्रेष्ठगीत 5:10–11 में ''मेरा प्रेमी गोरा और लाल सा है, वह दस हज़ार में उत्तम है। उसका सिर चोखा कुन्दन है; उसकी लटकती हुई लटें कौवों के समान काली हैं।'' अपने पहले दर्शन में यशायाह ने परमप्रधान और प्रतापी परमेश्वर को सुन्दर रूप में देखा था। जब उसने दूसरा दर्शन देखा, तो प्रभु क्रूस पर थे, उनका सिर कांटों के मुकुट से सुशोभित था। परमेश्वर के इस दर्शन को कोई भी सहन नहीं कर सकता था, और उनमें कोई खूबसूरती या सुंदरता नहीं बची थी। यशायाह परमेश्वर के पहले दर्शन को प्राप्त नहीं कर सका, जहां एक मेघधुनष जैसी रोशनी ने परमेश्वर को उनके सर्वोच्च सिंहासन पर घेर लिया, जहां उनके सारे काले–बाल कौवे की तरह थे, और जहां उनका सफेद जामा पूरे मंदिर को ढकने वाली एक ट्रेन की तरह था। हालाँकि, जब यशायाह ने दूसरी बार परमेश्वर के दर्शन को देखा, तो प्रभु यीशु को काँटों का ताज पहनाया, पीटा गया और लहूलुहान कर दिया गया, कलवरी के क्रूस पर थूका, और लज्जित होते हुए देखना असहनीय था। जिन लोगों ने उसे देखा था, वे यीशु के चेहरे को इतना बिगड़ा हुआ देखकर चौंक गए थे, क्योंकि उनमें कोई खूबसूरती या सुंदरता नहीं बची थी। यशायाह 52:14 ''जैसे बहुत से लोग उसे देखकर चकित हुए (क्योंकि

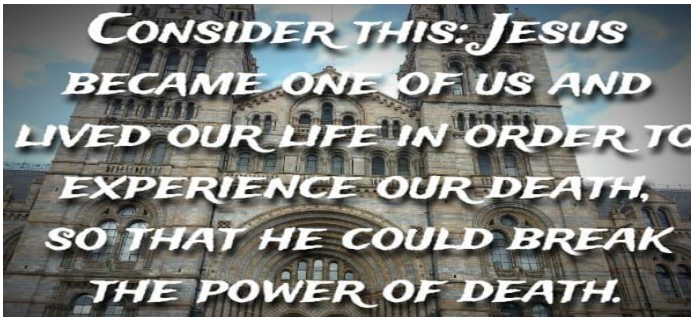

उसका रूप यहाँ तक बिगड़ा हुआ था कि मनुष्य का सा न जान पड़ता था और उसकी सुन्दरता भी आदमियों की सी न रह गई थी),''

हमारे परमेश्वर ने इस प्रकार कलवरी के क्रूस पर अपना जीवन क्यों दिया? यह इसलिए था ताकि हम अपने चारों ओर शांति के साथ इस दुनिया में एक सुंदर जीवन, सुंदरता का जीवन जी सकें। हमारे लिए, प्रभु ने इस धरती पर रहते हुए अपनी सुंदरता का त्याग किया।

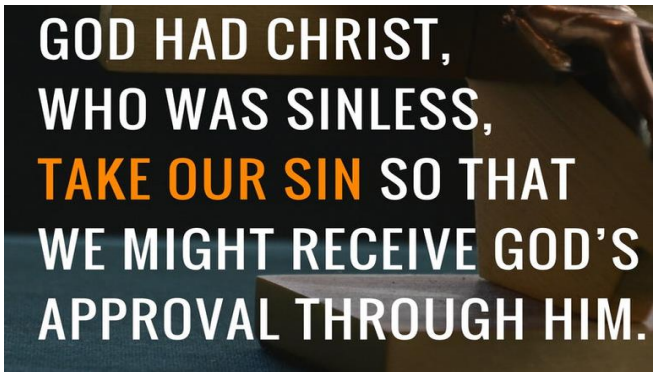

2 कुरिन्थियों 5:21 ''जो पाप से अज्ञात था, उसी को उसने हमारे लिये पाप ठहराया कि हम उसमें होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएँ।'' हमारे प्रभु, जिन्होंने इस दुनिया में कभी पाप या झूठ या चोरी नहीं की, जिन्होंने हमें हमारे पापों से छुड़ाया और हमारे सारे दुख और दर्द दूर कर दिए, हमारे लिए क्रूस पर चढ़ाए गए। भजन संहिता 119:25 ''मैं धूल में पड़ा हूँ; तू अपने वचन के अनुसार मुझ को जिला!'' परमेश्वर ने अपने आप को क्रूस पर चढ़ाया क्योंकि वह हमारे भीतर रहना चाहते थे, मिट्टी के बर्तनों में। भजन संहिता 85:6 ''क्या तू हम को फिर न जिलाएगा, कि तेरी प्रजा तुझ में आनन्द करे?'' हमें अनंत जीवन देने और हमारे जीवन को बहुतायत से बनाने के लिए, हमारे परमेश्वर ने क्रूस पर अपना जीवन बलिदान कर दिया, उनके शरीर को इस तरह से विकृत कर दिया कि कोई भी उन्हें पहचान नहीं पाएगा।

1 पतरस 2:24 ''वह आप ही हमारे पापों को अपनी देह पर लिये हुए क्रूस पर चढ़ गया, जिससे हम पापों के लिये मरकर धार्मिकता के लिये जीवन बिताएँ : उसी के मार खाने से तुम चंगे हुए।'' ऐसी सुंदरता में शासन करते हुए और सर्वोच्च सिंहासन पर बैठे हुए, परमेश्वर कलवारी के क्रूस पर एक ऐसी कुरूपता में परिवर्तित हो गए थे जो देखने लायक नहीं थे, केवल आपके और मेरे लिए! उन्होंने उस क्रूस पर हमारी लज्जा को दूर कर दिया और पाप में मरे हुए हम सब के लिए अपना बहुमूल्य जीवन दे दिया; कि अन्धकार में पड़े हुओं को प्रकाश में लाए, और बीमारों और खेदित मनवालों को चंगा करें।

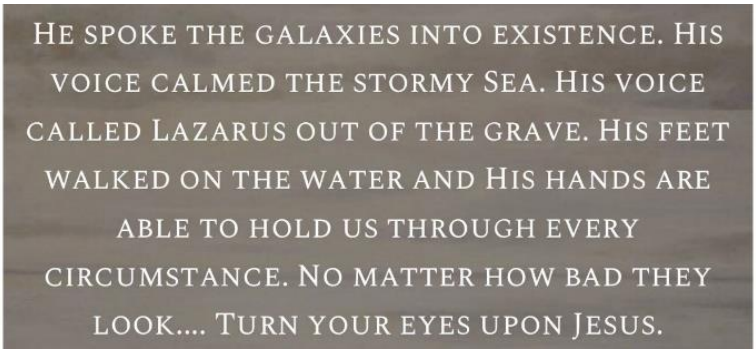

हमारे परमेश्वर को क्रूरता से कुचला गया और हमारे लिए क्रूस पर उनकी सुंदरता खो दी। क्रूस पर यीशु मसीह के बलिदान के कारण, आज हमारे पास आशा है। यदि हम एक पापी जीवन जी रहे हैं, तो हमें उनके बहुमूल्य लहू के द्वारा हमारे पापों से छुटकारा पाने की आशा है। जो बीमार हैं वे उसके कोड़े खाने से अपने चंगाई की उम्मीद कर सकते हैं। किसी भी तरह से हम या हमारे शरीर मर चुके हैं, हम एक बार फिर यीशु के लहू और शरीर के द्वारा पुनर्जीवित हो सकते हैं जो उन्होंने क्रूस पर बलिदान किया था।

यूहन्ना 11:25–26 ''यीशु ने उससे कहा, "पुनरुत्थान और जीवन मैं ही हूँ; जो कोई मुझ पर विश्वास करता है वह यदि मर भी जाए तौभी जीएगा, और जो कोई जीवित है और मुझ पर विश्वास करता है, वह अनन्तकाल तक न मरेगा। क्या तू इस बात पर विश्वास करती है?'' जब हम विश्वास करते हैं कि हमारा परमेश्वर हमारे लिए मरे और तीसरे दिन जी उठे, तो हम अपनी सारी बीमारियों और पापों से छुटकारा पा लेंगे, और हमें अनंत जीवन की आशीष मिलेगी। आज हमारे पाप या रोग कितने ही गहरे क्यों न हों, हमारे परमेश्वर के हाथ छोटे नहीं हैं कि वह हमें छूकर चंगा न कर सके। हमें केवल विश्वास करना चाहिए और भरोसा रखना

चाहिए। हमारे परमेश्वर जो हमारे लिए मरे और जी उठें, वह आज भी क्या करते है? वह अपने पिता परमेश्वर से हमारे लिए विनती कर रहे है।

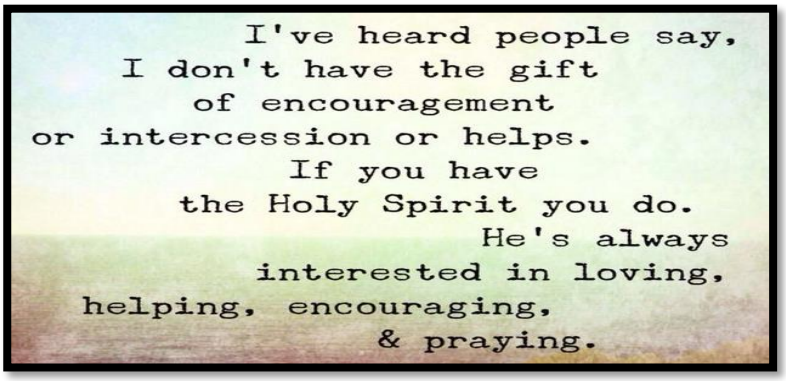

हमारे परमेश्वर ने हमें यह कहते हुए नहीं छोड़ा है, *'इस दुनिया में मेरी लड़ाई समाप्त हो गई है, मैंने तुम सभी के लिए क्रूस पर अपना जीवन बलिदान कर दिया है, अब तुम अपना बचाव करो।'* नहीं, हमारे परमेश्वर अभी भी अपने पिता के साथ हमारे लिए विनती कर रहे है। रोमियों 8:34 ''फिर कौन है जो दण्ड की आज्ञा देगा? मसीह ही है जो मर गया वरन् मुर्दों में से जी भी उठा, और परमेश्वर के दाहिनी ओर है, और हमारे लिये निवेदन भी करता है।'' हमारे परमेश्वर कितने अद्भुत है! एक परमेश्वर जिसने हमें अपनी टीम में शामिल होने के लिए चुना है, यीशु ने हमारे लिए अपना जीवन देकर और हमें इस संसार में सच्चाई और धार्मिकता का मार्ग दिखा कर हमें इस संसार के सभी पापों से अलग कर दिया है। वह हमें नहीं छोड़ते हैं, और आज भी हमारा हर बोझ उनका अपना है – क्योंकि यीशु अपने पिता के दाहिनी ओर बैठते है, हमें अपनी प्रार्थनाओं से सहारा देते है। जब शैतान परमेश्वर के सामने खड़ा होता है और उसे हमारे दोष, झूठ, डकैती, और हमारे विभिन्न पापों को दिखाता है, तो प्रभु यीशु मसीह हमारे पिता परमेश्वर का समर्थन करते है और हमारे लिए विनती करते है। यह हमारा सुंदर और अद्भुत परमेश्वर है जो हमें नहीं छोड़ते, भले ही हमने उन्हें कई बार क्रोधित किया हो। अपने बड़े प्रेम से, वह हमें इकट्ठा करते है और अपने पिता के साथ हमारे लिए विनती करते है, क्योंकि वह आज भी जीवित है!

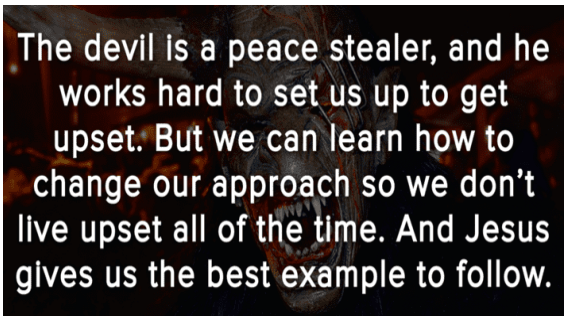

इब्रानियों 7:25 ''इसी लिये जो उसके द्वारा परमेश्वर के पास आते हैं, वह उनका पूरा पूरा उद्धार कर सकता है, क्योंकि वह उनके लिये विनती करने को सर्वदा जीवित है।'' हमारा परमेश्वर कल, आज और युगानुयुग एक सा है। वह एक जीवित परमेश्वर है, और वह आज भी अपने पिता के साथ हमारे लिए समर्थन और मध्यस्थता करते है। वह हमें कभी नहीं छोड़ेंगे और न ही हमें त्यागेंगे, भले ही वह हमसे क्रोधित हो। हमारा परमेश्वर क्षमा करने वाला परमेश्वर है, और वह आज भी जीवित है। सारी शर्मिंदगी के बावजूद उन्होंने आपके और मेरे लिए कलवारी के क्रूस पर चढ़ें, उन्होंने हमें कभी नहीं छोड़ा। जब हम परेशान होते हैं, या दुःख और पीड़ा में होते हैं, तो हमारा परमेश्वर हमारे लिए पीड़ा और दुःख का अनुभव करते है। वह कभी भी शैतान के किसी काम को हम पर हावी होकर हमें कमजोर होने नहीं देंगे; इसके बजाय, वह लगातार अपने पिता से हमारे दर्द, हमारे दुखों, हमारी असफलताओं और हमारी कमियों के बारे में विनती करते है। यह वही है जो आज भी कहते है, *'हे मेरे बच्चों, मत डरो।'* वह प्रकाशितवाक्य 1:17–18 में कहता है ''जब मैं ने उसे देखा तो उसके पैरों पर मुर्दा सा गिर पड़ा। उसने मुझ पर अपना दाहिना हाथ रखकर कहा, "मत डर; मैं प्रथम और अन्तिम और जीवता हूँ; मैं मर गया था, और अब देख मैं युगानुयुग जीवता हूँ; और मृत्यु और अधोलोक की कुंजियाँ मेरे ही पास हैं।'' क्योंकि हमारा परमेश्वर जी उठा हुआ परमेश्वर है, कोई भी बुरा काम हमें भयभीत या डरा नहीं सकता। केवल प्रभु का नाम ही हमें जीवन के सभी भयों से विजय दिलाएगा। प्रभु कहते हैं *'डरो नहीं।*

मैं मर गया था, लेकिन मैं जी उठा हूं और हमेशा तुम्हारे साथ रहूंगा। न्याय मेरे हाथ में दिया गया है, और अधोलोक और स्वर्ग की कुंजियां मेरे पास हैं।'

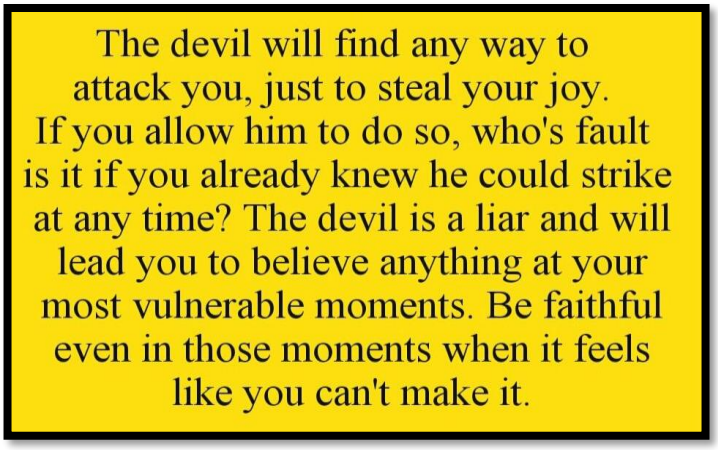

तो आइए हम अपना विश्वास केवल प्रभु पर रखें। हालाँकि दुश्मन हमें डराता है और हमारे जीवन में बाधाएँ लाने का प्रयास करता है, हमें डरना नहीं चाहिए क्योंकि हमारा परमेश्वर हमें सभी बाधाओं से छुड़ाएंगे। इब्रानियों 2:14–15 ''इसलिये जब कि लड़के मांस और लहू के भागी हैं, तो वह आप भी उनके समान उनका सहभागी हो गया, ताकि मृत्यु के द्वारा उसे जिसे मृत्यु पर शक्ति मिली थी, अर्थात् शैतान को निकम्मा कर दे; और जितने मृत्यु के भय के मारे जीवन भर दासत्व में फँसे थे, उन्हें छुड़ा ले।'' परमेश्वर इस संसार में क्यों आएं, हमारे लिए कष्ट सहें, कलवारी के क्रूस पर चढ़ाएं गएं, और क्रूस पर अपनी सारी सुंदरता को इस तरह खो दिया कि उन्हें देखा नहीं जा सकता? यह इसलिए था क्योंकि वह हमें शैतान के हर भय से छुड़ाना चाहते थे। हमारा परमेश्वर कभी भी हमें बहारी रूप से देखकर हमारा न्याय नहीं करते, बल्कि वह हमारे दिलों के भीतर देखते है। हमारा जीवन बहारी दिखावट का नहीं होना चाहिए, क्योंकि हमारा जीवन अस्थायी है। हमारे लिए परमेश्वर के कार्यों को हमारे ह्रदयों में अन्तर्लिखित किया जाना चाहिए, तब हमारा जीवन स्थायी होगा। परमेश्वर का प्रेम हमारे परिवार में वास करना चाहिए। हमें यह महसूस नहीं करना चाहिए कि हमने कहीं अस्पष्ट रूप से परमेश्वर के कार्यों के बारे में सुना है। इसके बजाय, जब परमेश्वर की उपस्थिति हमारे खून में है, तो हमें अपने जीवन में हर चीज का प्रत्यक्ष अनुभव होगा। याद रखो, हमारा परमेश्वर राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु है। उन्होंने आपके और मेरे लिए अपना जीवन दे दिया है, और इस प्रक्रिया में, वह देखने योग्य नहीं रहा। यह कुरूपता, उन्होंने अपने ऊपर ले ली ताकि आप और मैं इस दुनिया में सुंदर बन सकें। इसलिए, हमारे दिलों में, हमें हमेशा अपने प्रभु परमेश्वर को हम पर शासन करने देना चाहिए।

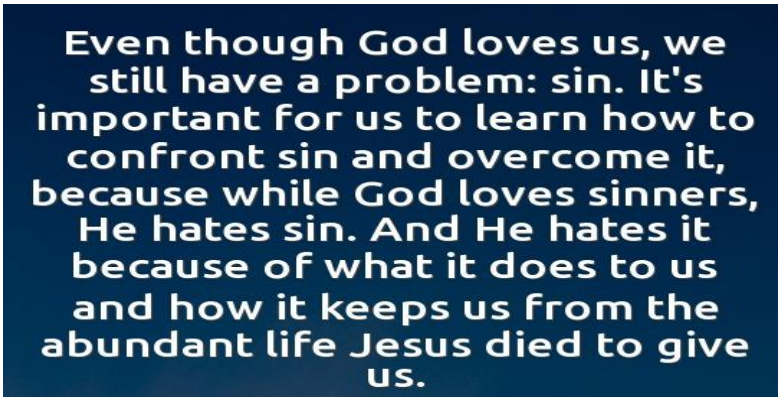

हम पवित्र शास्त्र की उस कहानी के बारे में जानते हैं जहाँ यहोवा शमूएल को इस्राएल के लिए एक नए राजा की खोज करने के लिए बेतलेहेम भेजते है। उसने शमूएल को यह नहीं बताया कि यिशै के किस पुत्र का अभिषेक किया जाना है। शमूएल खुशी–खुशी भविष्य के इस्राएल के राजा का अभिषेक करने के लिए बेथलहम गया, और जब वह यिशै के घर गया और सबसे बड़े बेटे को देखा, तो उसने महसूस किया कि यह वही है जिसे परमेश्वर ने चुना है, क्योंकि वह आकर्षक और सुंदर था, और इसलिए, शमूएल महसूस किया कि वह इस्राएल पर एक सिद्ध शासक होगा। 1 शमूएल 16:6–8 ''जब

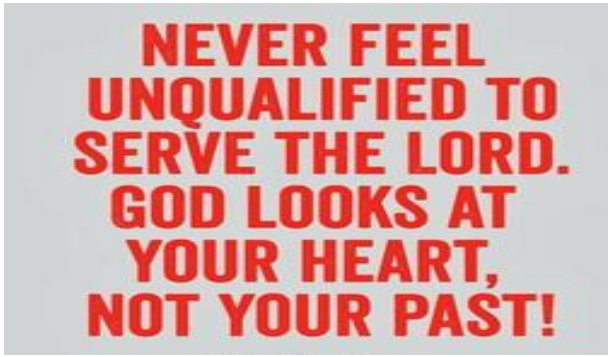

वे आए, तब उसने एलीआब पर दृष्टि करके सोचा, "निश्चय यह जो यहोवा के सामने है वही उसका अभिषिक्त होगा।" परन्तु यहोवा ने शमूएल से कहा, "न तो उसके रूप पर दृष्टिकर, और न उसके कद की ऊँचाई पर, क्योंकि मैं ने उसे अयोग्य जाना है; क्योंकि यहोवा का देखना मनुष्य का सा नहीं है; मनुष्य तो बाहर का रूप देखता है, परन्तु यहोवा की दृष्टि मन पर रहती है।" तब यिशै ने अबीनादाब को बुलाकर शमूएल के सामने भेजा। और उसने कहा, "यहोवा ने इसको भी नहीं चुना।'' जब शमूएल यिशै के सबसे बड़े बेटे से मिला, तो उसे पता चला कि परमेश्वर ने इस सुन्दर और आकर्षक बेटे को नहीं चुना था। याद रखें कि जब प्रभु हमें अपना कार्य करने के लिए चुनते हैं तो वह हमारे बाहरी रूप को नहीं बल्कि हमारे हृदयों को देखते हैं। परमेश्वर उन्हें जानता है जो उनसे प्रेम करते हैं, उनके लिए प्यासे हैं, और उनके भीतर सत्य है। जिनके पास बुद्धि, ज्ञान, धीरज और उस पर विश्वास करने की शक्ति है, उन्हें प्रभु परमेश्वर अपना कार्य करने के लिए चुनेंगे।

2 राजा 9 में, हम देखते हैं कि कैसे लोग परमेश्वर के प्रत्येक वचन को पूरा करते हैं। आज भी, परमेश्वर उन्हें चुनते हैं जो लगन से उनकी तलाश करते हैं और उनसे प्रेम करते हैं। हम परमेश्वर के लिए जो महसूस करते हैं वह केवल 'जुबानी सेवा' नहीं होना चाहिए, बल्कि यह हमारे दिल के भीतर से आना चाहिए। जब यह हमारे दिल में है, तो हम परमेश्वर के लिए जी सकते हैं और हम अपने जीवन में हर दिन उसका क्रूस उठा सकते हैं, क्योंकि परमेश्वर की आज्ञा के अनुसार, हमें अपने जीवन में हर दिन उनका क्रूस उठाना है। *'न तो बल से, और न शक्ति से, परन्तु मेरे आत्मा के द्वारा होगा,'* यहोवा कहता है। यदि जी उठा हुआ परमेश्वर हम में है, तो हम साहसपूर्वक कह सकते हैं जैसा कि भजन संहिता 23:4 में कहा गया है ''चाहे मैं घोर अन्धकार से भरी हुई तराई में होकर चलूँ, तौभी हानि से न डरूँगा; क्योंकि तू मेरे साथ रहता है; तेरे सोंटे और तेरी लाठी से मुझे शान्ति मिलती है।'' हमें सभी भयों से दूर रखने के लिए, परमेश्वर ने क्रूस पर अपना जीवन दे दिया। यदि हम अपने परमेश्वर को अपने भीतर रखते हैं, तो हम भी निश्चय के साथ कह सकते हैं, जैसा कि दाऊद ने भजन संहिता 23:1–6 में किया है: ''यहोवा मेरा चरवाहा है, मुझे कुछ घटी न होगी। वह मुझे हरी हरी चराइयों में बैठाता है; वह मुझे सुखदाई जल के झरने के पास ले चलता है; वह मेरे जी में जी ले आता है। धर्म के मार्गों में वह अपने नाम के निमित्त मेरी अगुवाई करता है। चाहे मैं घोर अन्धकार से भरी हुई तराई में होकर चलूँ, तौभी हानि से न डरूँगा; क्योंकि तू मेरे साथ रहता है; तेरे सोंटे और तेरी लाठी से मुझे शान्ति मिलती है। तू मेरे सतानेवालों के सामने मेरे लिये मेज़ बिछाता है; तू ने मेरे सिर पर तेल मला है, मेरा कटोरा उमड़ रहा है। निश्चय भलाई और करुणा जीवन भर मेरे साथ साथ बनी रहेंगी; और मैं यहोवा के धाम में सर्वदा वास करूँगा।''

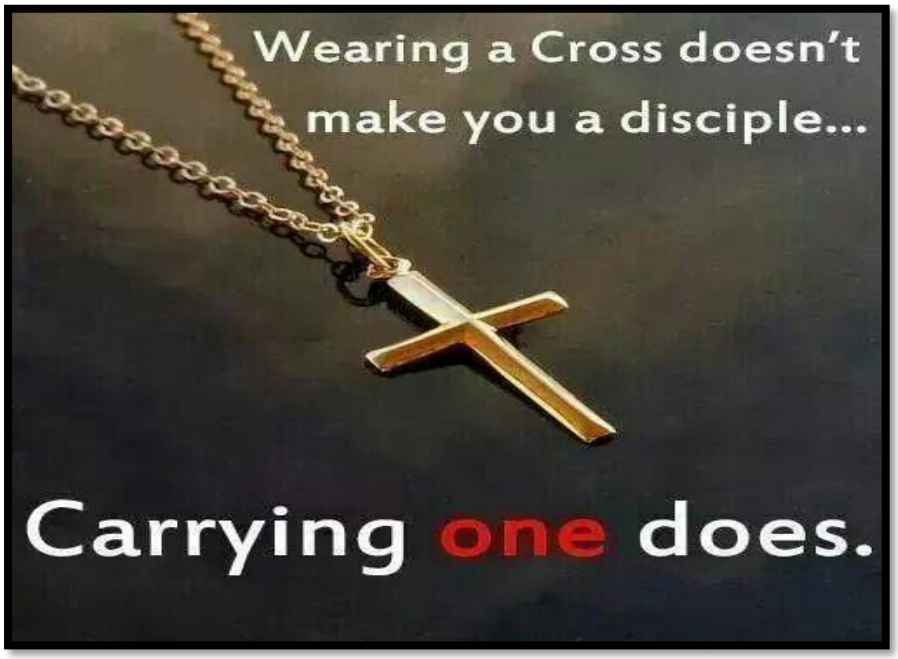

यहोवा ने दाऊद को इस्राएल पर शासक के रूप में चुना क्योंकि उन्होंने उनके प्रति दाऊद के प्रेम को पहचाना। जबकि शमूएल यिशै के सबसे बड़े बेटे के बाहरी रूप से प्रभावित था, प्रभु ने चरवाहे लड़के दाऊद के मूल्य को पहचाना, क्योंकि वह उसके दिल को जानते थे। परमेश्वर दाऊद के विश्वास और भरोसे को जानते थे, और उन्होंने दाऊद के घर लौटने तक शमूएल को अंतिम निर्णय सुनाने से रोक दिया। इसलिए दाऊद निडरता से कहता है, *'यहोवा मेरा चरवाहा है, मुझे कुछ घटी न होगी।* दाऊद ने बड़े प्रेम से यह बात कही। वह जानता था कि जब वह अकेला होता है तो प्रभु ही उसका साथी होता है। वे निरन्तर आपस में बातें किया करते थे, और परमेश्वर दाऊद को सदा प्रोत्साहित करते थे। उसके दुख और दर्द में केवल प्रभु ही उसके साथ थे। इसलिए परमेश्वर ने शमूएल को अपना अंतिम निर्णय लेने के लिए दाऊद के लौटने तक प्रतीक्षा करने के लिए कहा; और उसके बाद, शमूएल ने इस्राएल के राजा के रूप में दाऊद का अभिषेक किया।

परमेश्वर हमारे बाहरी रूप को नहीं देखते है, न ही वह हमारी बड़ी–बड़ी बातों और बड़े–बड़े वादों पर विचार करते है जो हम उनके लिए करते हैं। बल्कि परमेश्वर हमारी नम्रता और हृदय की पवित्रता को देखते है।

भविष्यवक्ता यशायाह का पहला दर्शन जो उन्होंने आत्मिक रूप से देखा वह सर्वोच्च सिंहासन पर हमारे सुंदर और महिमामयी परमेश्वर का था, जिसकी सर्वोच्च महिमा में उनके चारों ओर प्रकाश का एक मेघधुनष था। उसी परमेश्वर को क्रूस पर पीटा गया था, उनकी सारी सुंदरता खो गई थी, उनकी कोई खूबसूरती नहीं थी, और कोई भी उनकी ओर नहीं देख सकता था। वह हमारे पापों के लिए क्रूस पर चढ़ाए गए थे, ताकि बदले में हम शैतान से डरे बिना एक निडर जीवन जी सकें, इस प्रकार बुराई पर हमारी सारी लड़ाई जीत सकें। क्रूस पर अपनी मृत्यु के साथ, यीशु ने हमें शैतान के सभी कामों से जीत दिलाई, इसलिए हमें अपने जीवन में अपने प्रभु के अद्भुद कार्यों को कभी नहीं भूलना चाहिए।

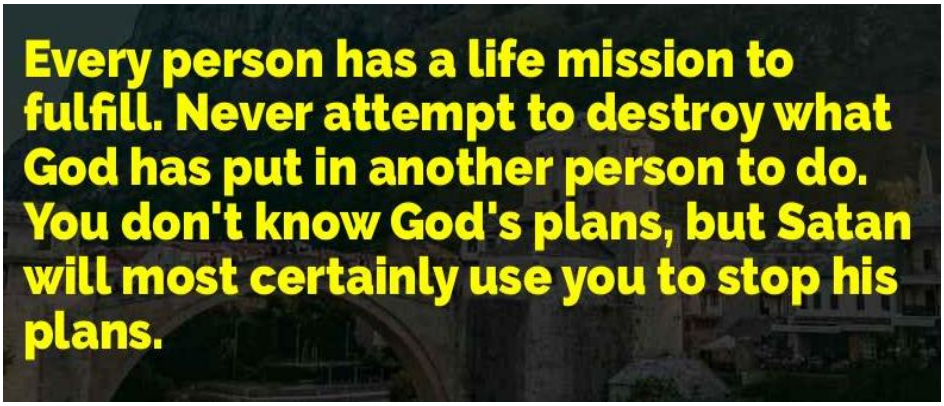

अय्यूब 19:25 ''मुझे तो निश्चय है कि मेरा छुड़ानेवाला जीवित है, और वह अन्त में पृथ्वी पर खड़ा होगा;'' अय्यूब का जीवन दुखी था, और उसके कष्टों के दौरान कोई भी उसके साथ नहीं था, क्योंकि सभी ने उसे त्याग दिया था। फिर भी उसने कहा, *'निश्चय, मेरे प्रभु मुझे बचाएंगे, और वह इस पृथ्वी पर न्याय करेंगे।'* हम बाइबल में देखते हैं कि अय्यूब की पत्नी के नाम का उल्लेख नहीं है, जैसे उसने यहोवा के विरुद्ध बातें कीं। अपने कष्टों के द्वारा, अय्यूब का भरोसा और प्रेम केवल परमेश्वर पर बना रहा। अय्यूब 19:19–25 ''मेरे सब परम मित्र मुझ से द्वेष रखते हैं, और जिन से मैं ने प्रेम किया वे पलटकर मेरे विरोधी हो गए हैं। मेरी खाल और मांस मेरी हड्डियों से सट गए हैं, और मैं मृत्यु से बाल–बाल बच गया हूँ। हे मेरे मित्रो! मुझ पर दया करो, दया, क्योंकि परमेश्वर ने मुझे मारा है। तुम परमेश्वर के समान क्यों मेरे पीछे पड़े हो? तुम मेरे मांस से क्यों तृप्त नहीं हुए? "भला होता, कि मेरी बातें लिखी जातीं; भला होता, कि वे पुस्तक में लिखी जातीं, और

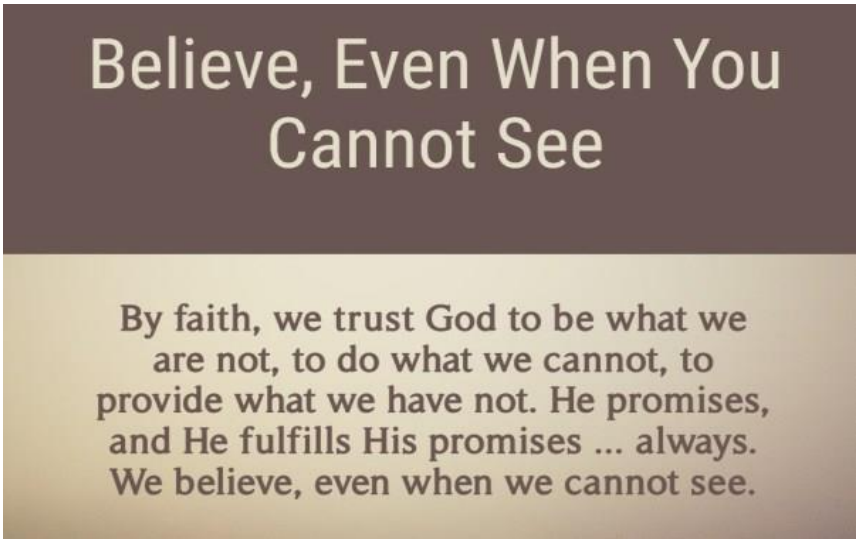

लोहे की टाँकी और सीसे से वे सदा के लिये चट्टान पर खोदी जातीं। मुझे तो निश्चय है कि मेरा छुड़ानेवाला जीवित है, और वह अन्त में पृथ्वी पर खड़ा होगा;'' यदि हमारे पास भी अय्यूब की तरह विश्वास है, भले ही वह राई के दाने जितना छोटा ही क्यों न हो, यह संसार को जीतने के लिए पर्याप्त होगा। लेकिन, संकट के समय में, हम परमेश्वर के प्रेम को भूल जाते हैं, और हम यह भूल जाते हैं कि जब हम रोते हैं, वह हमारी विनती सुनेगा और जब हम रोयेंगे वह हमें बचाने आएंगे। संकट के समय हम परमेश्वर को छोड़ देते हैं। फिर भी, यहाँ हम अय्यूब को उसके सारे कष्टों के बीच यह कहते हुए देखते हैं, *'मैं जानता हूँ कि मेरा परमेश्वर इस पृथ्वी पर अन्त में न्याय करेंगे, और वह मुझे मेरे सारे दर्द और शोक से छुड़ाएंगे।'*

जब हमें यह आत्मविश्वास होता है कि हमारा परमेश्वर न तो ऊँघते है और न ही सोते है, जब हम यह विश्वास करते हैं कि क्रूस पर उनका बलिदान हमारे अपने लिए था, तो हम अपने जीवन की किसी भी परिस्थिति में कभी भी विचलित नहीं होंगे। वह एक ऐसा परमेश्वर है जो हमें हमेशा हमारे सभी दुखों और पीड़ाओं से छुड़ाएंगे। हमारी हर जीत प्रभु से आती है। यशायाह 50:4 ''प्रभु यहोवा ने मुझे सीखनेवालों की जीभ दी है कि मैं थके हुए को अपने वचन के द्वारा संभालना जानूँ। भोर को वह नित मुझे जगाता और मेरा कान खोलता है कि मैं शिष्य के समान सुनूँ।'' हमारे प्रभु क्या करते है? वह हमें इस तरह से सिखाते है कि हम अपने प्रति उनके प्रेम को समझ सकें। अगर हम पहली कक्षा के छात्र को आठवीं कक्षा का पाठ पढ़ाते हैं, तो क्या वह इसे समझ पाएगा? नहीं, वह हमारी बात भी नहीं सुनेगा। इसी तरह हमारे प्रभु हमें हमारी स्थिति और हमारे जीवन में आवश्यकता के अनुसार सिखाते हैं। उनका अनुग्रह और दया हमारे जीवन में हर सुबह नई होती है। हमारे जीवन के दो दिन कभी भी एक जैसे नहीं होंगे। अलग–अलग परिस्थितियों में उनका प्यार हमारे लिए अलग है। वह हमसे हमारी जरूरत के हिसाब से अलग तरह से बात करते है।

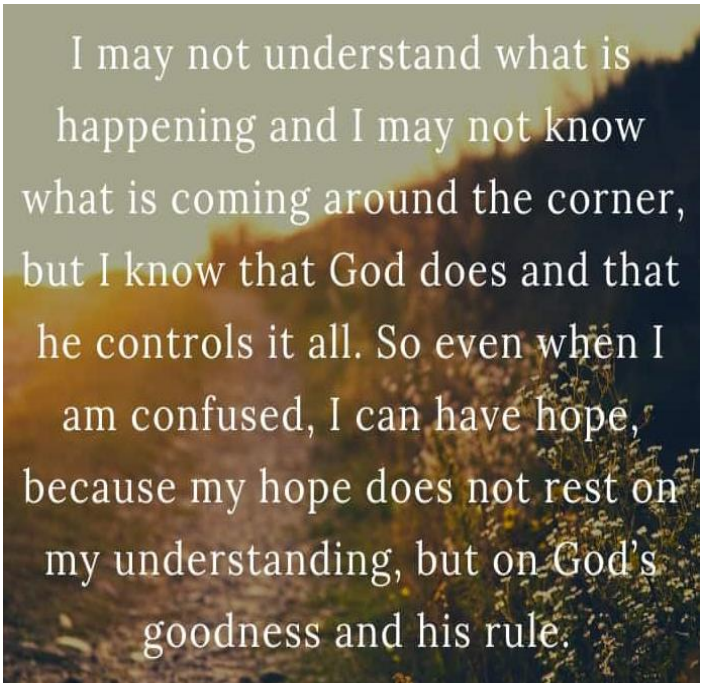

आज वह हम पर अपना प्यार बरसा सकते हैं, जबकि कल स्थिति ऐसी हो सकती है कि वह हमें सुधारें क्योंकि वह हमसे नाराज और परेशान हो सकते हैं। यह उनका हमसे प्रेम करने का तरीका है, इसलिए हमें परिस्थिति के अनुसार अपने परमेश्वर के प्रेम को स्वीकार करने में सक्षम होना चाहिए।

परमेश्वर ने मूसा से बात की और उसे सुबह–सुबह सीनै पर्वत की चोटी पर आने को कहा जहाँ वह उससे बात करेगा। निर्गमन 34:2 ''सबेरे तैयार रहना, और भोर को सीनै पर्वत पर चढ़कर उसकी चोटी पर मेरे

सामने खड़ा होना।'' जो लोग प्रभु से प्रेम करते हैं वे किसी भी स्थिति में उनके सामने खड़े हो सकते हैं। मूसा चालीस वर्ष तक फिरौन के महल में रहा। उसे फिरौन की बेटी के बेटे के रूप में पाला गया था। फिर भी, जिस दिन उसे पता चला कि वह एक इब्री है और मिस्री नहीं है, उसने फिरौन के महल की सभी विलासिता को त्याग दिया और अपने भाइयों, इस्राएलियों के साथ उनके कष्टों और दासता में शामिल हो गया। किसने मूसा को ये बातें सिखाई? जब परमेश्वर हमारे जीवन को छूते है और हमें चुनते है, तो वह हमें सब कुछ सिखाते है। यह परमेश्वर है जो हमें चुनते है, न कि हम स्वयं को। परमेश्वर ने मूसा को सभी इस्राएलियों के कष्टों के बारे में याद दिलाया और उन्हें उनके दासत्व से छुड़ाने के लिए उनका अगुवा बनने के लिए प्रोत्साहित किया।

परमेश्वर हमें उसके सम्मुख खड़े होने के योग्य बनाते है जब हम जो कुछ भी करते हैं उसमें धर्मी होते हैं। याकूब 4:8 ''परमेश्वर के निकट आओ तो वह भी तुम्हारे निकट आएगा। हे पापियो, अपने हाथ शुद्ध करो; और हे दुचित्ते लोगो, अपने हृदय को पवित्र करो।'' मूसा ने केवल अपने लोगों को गुलामी से छुड़ाने के बारे में सोचा। भजन संहिता 36:9 ''क्योंकि जीवन का सोता तेरे ही पास है; तेरे प्रकाश के द्वारा हम प्रकाश पाएँगे।'' जीवन का सोता जीवित परमेश्वर के हाथ में है, और इसे मूसा ने अच्छी तरह जान लिया, इसलिए परमेश्वर ने मूसा को आशीष दी।

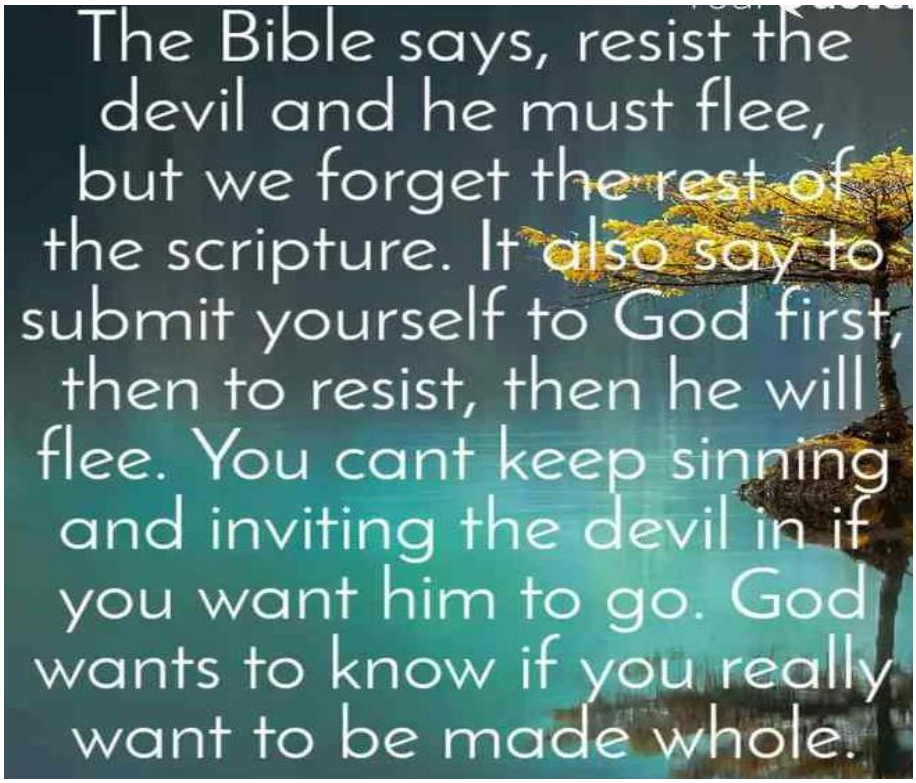

याकूब 4:7 ''इसलिये परमेश्वर के अधीन हो जाओ; और शैतान का सामना करो, तो वह तुम्हारे पास से भाग निकलेगा।'' शैतान हमसे दूर भागे इसके लिए, हमें परमेश्वर के वचन के प्रति समर्पित होना चाहिए और स्वयं को परमेश्वर के हाथों में सौंप देना चाहिए। केवल यीशु के लहू और नाम के द्वारा ही हम शैतान से छुटकारा पाते हैं। जब यीशु ने चालीस दिन और रात उपवास किया, तो उसके तुरंत बाद शैतान ने उनका सामना किया। लेकिन, जैसा कि यीशु शैतान की चुनौतियों का सामना करने के लिए पहले से अधिक सुसज्जित और मजबूत थे, उन्होंने उसे हरा दिया। तत्पश्चात, परमेश्वर के दूत ने यीशु को दर्शन दिया और उसकी सेवा और आराधना की। शैतान से जीत हासिल करने के लिए हमें कितना अधिक अपने जीवन को परमेश्वर के हाथों में सौंप देना चाहिए! याकूब 4:7 ''इसलिये परमेश्वर के अधीन हो जाओ; और शैतान का सामना करो, तो वह तुम्हारे पास से भाग निकलेगा।'' हमारे दिलों और घरों में किसका प्यार होना चाहिए? जिन्होंने कलवारी के क्रूस पर हमारे लिए अपना जीवन दे दिया, हमें उनके बलिदान के लिए हमेशा याद रखना चाहिए और उनका सम्मान करना चाहिए।

मरकुस 16:17 ''विश्वास करनेवालों में ये चिह्न होंगे कि वे मेरे नाम से दुष्टात्माओं को निकालेंगे, नई नई भाषा बोलेंगे,'' जो लोग परमेश्वर के हर वचन और वादे पर विश्वास करते हैं, वे शैतान के कामों से बच सकेंगे।

हम एक दिन में विश्वासी नहीं बन सकते, क्योंकि यह परमेश्वर के साथ कई वर्षों के संबंध की प्रक्रिया है। हमें परमेश्वर के विश्वास और प्रेम में जड़ जमाए रहना चाहिए, क्योंकि जब हम परमेश्वर में जड़ पकड़ेंगे, तो शैतान इस संबंध को देखेगा और हमसे दूर भाग जाएगा। जैसे हमारा परमेश्वर हम पर दृष्टि रखते है, वैसे ही शैतान भी हम पर दृष्टि रखता है। जब शैतान हमारे भीतर परमेश्वर के लिए सच्चाई और प्रेम को देखेगा तो वह डर के मारे हमारे पास से भाग जाएगा। यीशु मसीह कहते हैं कि एक सच्चे विश्वासी की निशानी तब होती है जब शैतान विश्वासी के दिल और प्रभु के प्रति प्रेम को देखकर उससे दूर भाग जाता है। भजन संहिता 91:13 ''तू सिंह और नाग को कुचलेगा, तू जवान सिंह और अजगर को लताड़ेगा।'' हम अपने जीवन में सिहों और आग पर जीत हासिल कर सकते हैं... हमने शास्त्र में पढ़ा है कि कैसे लोगों के विश्वास ने उन्हें सिहों के प्रकोप और धधकती आग से बचाया है। ये वे लोग हैं जिन्होंने कहा है कि *'चाहे हमारा परमेश्वर हमें बचाए या न बचाए, फिर भी हम केवल अपने जीवित परमेश्वर की ही आराधना करते रहेंगे। परमेश्वर के लिए हमारा प्रेम कभी नहीं बदलेगा।'* जब परमेश्वर हमेशा हमारे साथ रहेंगे, तो वह हमें इन सब बातों से जय दिलाएंगे। लूका 10:19 ''देखो, मैं ने तुम्हें साँपों और बिच्छुओं को रौंदने का, और शत्रु की सारी सामर्थ्य पर अधिकार दिया है; और किसी वस्तु से तुम्हें कुछ हानि न होगी।'' परमेश्वर ने हमें सांपों और बिच्छुओं को रौंदने का और शैतान के सब कामों पर जय पाने का अधिकार दिया है।

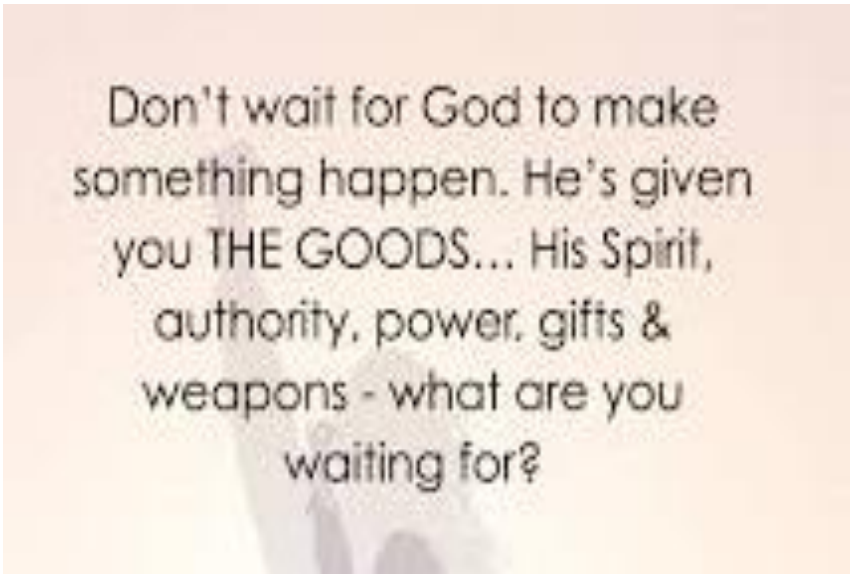

यशायाह का कलवरी के क्रूस पर लटके यीशु मसीह का दूसरा आत्मिक दर्शन, जिसमें कोई सुंदरता या खूबसूरत नहीं है, हमें यह अधिकार देने के लिए था। यीशु ने अपने जीवन का बलिदान दिया ताकि हम हर बुराई से लड़ सकें, सिंहों और उग्र आग पर विजय प्राप्त कर सकें, और सर्प और बिच्छुओं को रौंद सकें।

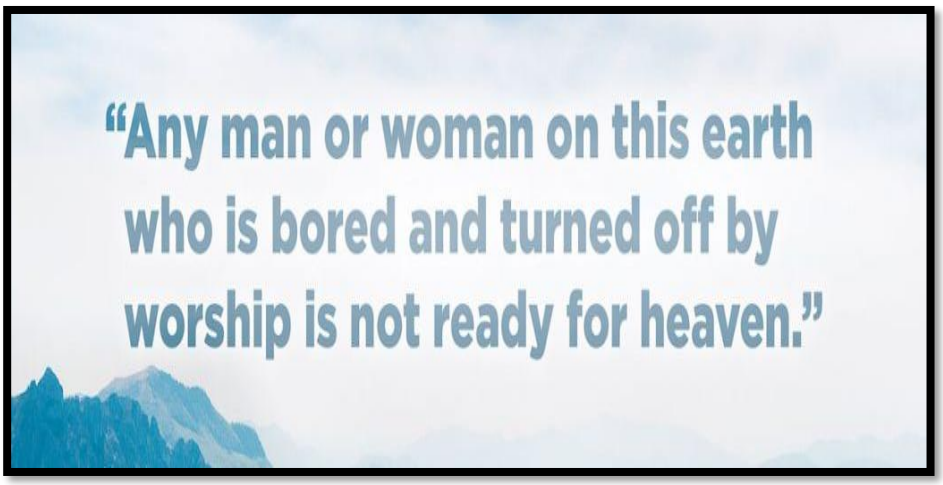

हमारा परमेश्वर जो जी उठे है और आज जीवित है, हमारे दिलों में हमेशा के लिए रहते है। हमारे प्रभु यीशु ने आपके और मेरे लिए क्रूस पर छह घंटे कष्ट झेले और सहे, और हमें क्रूस पर उनके कष्टों को कभी नहीं भूलना चाहिए। वह उनके साथ वास करता है जो इस सत्य पर विश्वास करते हैं, और जो उनके प्रेम में वास करते हैं।

आज भी, हमारा प्रभु यीशु पिता परमेश्वर के दाहिनी ओर बैठते है, आपके और मेरे लिए विनती करते है, हमारा समर्थन करते है, हमारे लिए प्रार्थना करते है, और अपने पिता के साथ आपकी और मेरी वकालत करते है। जब हम अपनी आँखें बंद करते हैं, तो इसका मतलब यह नहीं है कि प्रभु भी अपनी आँखें बंद कर लेते हैं, क्योंकि हमारा प्रभु न तो ऊँघते है और न ही सोते है; परन्तु इस संसार में हमारे हर भले बुरे काम की रखवाली कर रहे है।

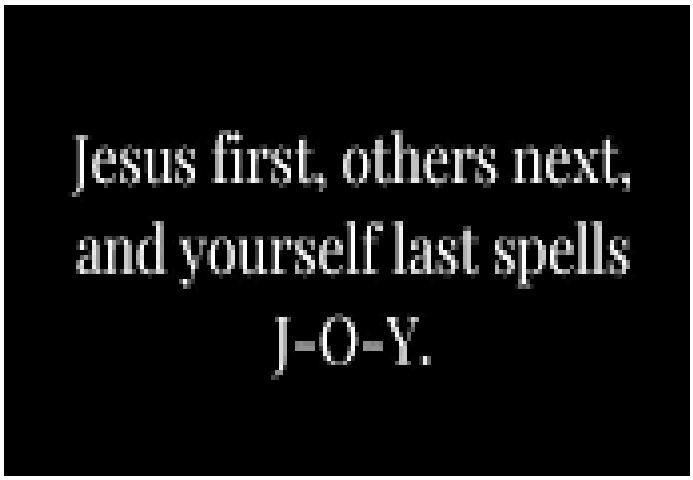

हमें अपने आप को अंधकार, पाप और किसी भी बुरे काम से अलग करना चाहिए, और अपने जीवन को सच्चाई में जीना चाहिए, क्योंकि जीवित जल के सोते हमारे जीवित परमेश्वर के पास हैं। यीशु कहते हैं, *'मेरे पिता ने मुझे अधोलोक और स्वर्ग की कुंजियाँ दी हैं,'* इसलिए आइए हम सच्चाई और प्रेम से अपने जीवित परमेश्वर की आराधना करें।

यह संदेश हमारे जीवन को आशीषित करे!

पास्टर सरोजा म।